॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्री गङ्गाष्टकम्॥

विषय सूची

॥ श्रीगङ्गाष्टकम् ॥ 3

भवदीय :

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगङ्गाष्टकम् ॥

श्रीमद भगवतपूज्यपाद आद्यशङ्कराचार्य प्रणीतम्

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि ।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे
तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ १ ॥

हे सम्पूर्ण सम्पत्ति सम्पन्ना भगवती भागीरथी ! तुम्हारे तटपर मैं केवल जलाहार करता हुआ विषयभोगकी तृष्णा से रहित होकर भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना करता हूँ । हे सम्पूर्ण पापों को नष्ट करनेवाली, स्वर्ग की सीढ़ी से सम्बन्ध करानेवाली अत्यन्त चञ्चल लहरोंवाली तथा दिव्यस्वरूपवाली माता गङ्गा ! प्रसन्न होओ ॥ १ ॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः
कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।
अमरनगरनारीचामरग्राहिणीनां
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ २ ॥

हे सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करने वाली, भगवान् महादेव के जटामुकुटमें मालारूप आभूषण के समान देवि गङ्गे ! तुम्हारे जल का जो प्राणी बून्द के समान थोड़े परिमाण में भी स्पर्श करते हैं वे कलियुग के पापमय कलङ्करूपी मल के आतङ्क से रहित होकर देवताओं की पुरी अमरावती की चामर ग्रहण करनेवाली देवाङ्गनाओं के अङ्क में लोटते हें ॥ २ ॥

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती ।
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भत् र्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु ॥ ३ ॥

ब्रह्माण्ड के खण्ड करती हुई, भगवान् शङ्करके मस्तक पर जटारूपिणी लता को प्रफुल्लित करती हुई, स्वर्गलोक से नीचे गिरती हुई, सुमेरु पर्वत की गुफाकी मध्य शिला परसे बहती हुई, पृथ्वीके पृष्टभागपर लोटती हुई, पापोंके समूह का नाश करती हुई, समुद्र को जलसे परिपूर्ण करती हुई, देवलोक की पवित्र नदी गङ्गा हमको पवित्र करे ॥ ३ ॥

मज्जन्मातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं स्नानैः सिद्धाङ्गनानां
कुचयुगविगलत्कुङ्कुमासंगपिङ्गम् ।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्नतीरस्थनीरं पायानो गाङ्गमम्भः
करिकलभकराक्रान्तरंहस्तरङ्गम् ॥ ४ ॥

जलक्रीडा के समय में स्नान करने वाले हाथियों के कपोलों से गिरते हुए मदरूपी मद्य को पाकर आनन्दित हुए भ्रमर समूह से युक्त, स्नान करने के कारण सिद्धों की स्त्रियों के स्तनद्वय से छुटी हुई केसर से पीले रंग वाला प्रातःकाल व सायंकाल सन्ध्यावन्दन करने से मुनियों के कुश और पुष्पों के समूह से ढका हुआ तट के निकट का नीर तथा हाथियों के बच्चों द्वारा सुण्डों से रोकेजाने के कारण वेगसे बहनेवाला तरङ्गयुक्त परमपावन गङ्गाजल हमारी रक्षा करे ॥ ४ ॥

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम् ।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ॥५॥

आरम्भ में प्रथम शरीरी ब्रह्मा के कमण्डलु में जलरूप में विद्यमान थी, तत्पश्चात् शेष शैया पर शयनकरनेवाले भगवान् विष्णु का पवित्र चरणोदक बनी और फिर भगवान् शङ्कर की जटाओं का श्रेष्ठ आभूषण हुई, इस प्रकार अनेक रूपों में महर्षि जन्हु की कन्या, पापों का नाश करनेवाली भगवती भागीरथी देखी जाती है ॥ ५ ॥

शैलेन्द्रावतारिणी निजजले मज्जनोत्तारिणी
पारावारविहारिणी भवभयश्रेणीसमुत्सारिणी। शेषाहेरनुकारिणी
हरशिरोवल्लीदलाकारिणी ।
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी ॥६॥

पर्वतराज हिमालय से निकलनेवाली, अपने जल में स्नान करनेवाले जन को तारनेवाली, समुद्र में विहार करने वाली, संसार के भय समुदाय को दूर करनेवाली, शेषनाग के समान तिरछी लहरों से युक्त चाल का अनुकरण करने वाली, भगवान् शङ्कर के मस्तक पर लतापत्र के आकारवाली, काशी प्रदेशमें विहार करनेवाली और मन को हरनेवाली श्रीगङ्गामहारानी की जय हो ॥ ६ ॥

कुतोऽवीचिचिस्तव यदि गता लोचनपथं
त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवासं वितरसि ।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृतां ।
तदा मातः शतक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः ॥ ७ ॥

यदि कोई विशेष पुण्य हो तो तुम्हारी लहरों की शोभा नेत्रमार्ग से (हृदय) प्राप्त होती है। हे गंगे ! तुम्हारा जल पीने से तुम पीताम्बरधारी भगवान् विष्णुके पुर - वैकुण्ठधाम में निवास देती हो । हे माता गंगा ! यदि जीवधारियों के शरीर तुम्हारी गोद में गिरते है तो उस समय उसके सम्मुख देवराज इन्द्र के पद की प्राप्तिभी अत्यन्त तुच्छ प्रतीत होती है ॥ ७ ॥

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणी स्वर्गमार्गे ।
प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद ॥८॥

हे माता गंगा ! तुम तीनों लोकों का सार हो, समस्त देवाङ्गनाओं के स्नान करते समय में उनके दिव्य अङ्गों से छूटे हुए दिव्य अङ्गराग की सुगन्धि से युक्त प्रशस्त निर्मल जलवाली हो, परम पावन परमाधार पूर्ण ब्रह्मस्वरूपिणी हो, सर्वव्यापी विष्णुके चरणों की रजका हरण करनेवाली हो, स्वर्ग का मार्ग दिखानेके लिये निसैनीरूपिणी हो, ब्रह्महत्यादि पापोंमें तुम्हारे पतितपावन जलको कणमात्र पीना पापसे निर्मुक्त होने के लिये पूर्ण प्रायश्चित्त है, तीन लोकोंके पापोंको हरनेवाली तुम्हारी प्रशंसा करने में कौन समर्थ है ? अतः है माता गङ्गा ! हमपर प्रसन्न होओ ॥ ८॥

मातर्बाह्नवि शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम् ।
सानन्दं मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवो
भूयाद्भक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥९॥

हे माता जाह्नवी, हे भगवान् शङ्कर की जटाओं में वलय (कङ्कन) के आकारवाली, नत मस्तक हो हाथ जोडकर तुम्हारे तट पर देहान्त होने के समय श्रीमन्नारायण के दोनों चरणकमलों का आनन्दपूर्वक स्मरण करते हुए मेरे प्राणगमन का उत्सव होगा अतः प्रार्थना है कि उससमय हरि और हर अर्थात् विष्णु और शिव दोनों में अभेदस्वरूपिणी अद्वैतात्मिका, अटल, अविचल और अविनाशिनी भक्ति प्राप्त होवे ॥ ९ ॥

गङ्गाष्टकपाठमाहात्म्य।

गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतो नरः ।।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ १० ॥

परलोकमें सद्गति की प्राप्तिके लिये प्रयत्नशील जो मनुष्य इस गङ्गाष्टक को पढता है वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर अन्तमें विष्णुलोक को जाता है ॥ १० ॥

॥ इति श्री श्रीगङ्गाष्टकम् संपूर्णम् ॥